# इकाई 6 भारतीय दर्शन और पर्यावरण*

## संरचना

6.0 उद्देश्य

6.1 परिचय

6.2 कुछ प्रारंभिक टिप्पणियां

6.3 भारतीय दर्शन में वन

6.4 भारतीय दर्शन में जल

6.5 भारतीय दर्शन में झीलें

6.6 भारतीय दर्शन में पौधे और जानवर

6.7 सारांश

6.8 शब्दावली

6.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

## 6.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप समझेंगे कि :

- हम आज जिन मुद्दों का सामना कर रहे हैं, उनके संदर्भ में हम भारतीय दर्शन और पर्यावरण का अध्ययन कर रहे हैं;

* श्री सुरेन्द्र के. रोहिल्ला, सहायक प्राध्यापक, अंग्रेज़ी विभाग, मोतीलाल नेहरू महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।

- भारतीय दर्शन में वनों को किस प्रकार देखा गया हैं;
- भारतीय दर्शन में पानी को कैसे देखा गया है; और
- कैसे भारतीय दर्शन में एक जटिल पारिस्थितिक तंत्र में विभिन्न तत्व जैसे पानी और प्राणी जैसे पौधे और जानवर आपस में जुड़े है।

## 6.1 प्रस्तावना

भारतीय सभ्यता वास्तव में विश्व की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक है। हालांकि पश्चिमी सभ्यता की शुरुआत यूनानियों से होती है जो ईसा पूर्व बारहवीं शताब्दी के आसपास कहीं आए थे। दूसरी ओर, हाल में यह पता चला है कि भगवान कृष्ण के राज्य से जुड़ी द्वारका शहर बीस से तीस हजार साल पहले की है। यह गलती से खोजा गया था जब गुजरात के पश्चिमी तट पर प्रदूषण के स्तर का अध्ययन करने के लिए एक पश्चिमी दल आधुनिक तटीय द्वारका के पास आया था और संयोग से उन्हें एक जलमग्न महानगर दिखा। यह दो सभ्यताओं के बीच तुलना की बात नहीं है, लेकिन किसी विशेष समाज के दर्शन को समझने के लिए, उसके साथ न्याय नहीं किया जा सकता है यदि इसका अध्ययन इसकी सभ्यतागत पृष्ठभूमि के संदर्भ में नहीं किया गया है। चूंकि हमारी चर्चा का विषय भारतीय दर्शन और पर्यावरण है, इसलिए हमारे लिए दर्शन का अर्थ समझना अनिवार्य है। सीधे शब्दों में दर्शन 'एक सिद्धांत या दृष्टिकोण है जो व्यवहार के लिए एक मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में कार्य करता है'। हालांकि, कुछ विद्वान एक दार्शनिक को हल्के ढंग से परिभाषित करते हैं, लेकिन सही मायने में एक दार्शनिक वह व्यक्ति है जो एक अंधेर कमरे म एक काली बिल्ली को खोजने की कोशिश कर रहा है जो वहाँ नहीं

है'। इसलिए दर्शन को परिभाषित करना एक कठिन कार्य हो जाता है। परन्तु चूंकि हमारी चर्चा भारतीय चिंतन के मानकों के अंदर है, इसलिए हम यह समझने की कोशिश करेंगे कि भारतीय विचार पर्यायवरण के सरक्षण और प्रसार में कैसे सहायक रहे हैं।

## 6.2 कुछ प्रारंभिक टिप्पणियां

समय समय पर हम अपने पर्यावरण को बचाने के लिए विभिन्न देशों की सरकारों के प्रमुखों द्वारा मांगों को सुनते हैं। कुछ लोग भूमंडलीय ऊष्मीकरण, $Co_2$ स्तर, ओज़ोन परत रिक्तीकरण और हिमनदों के पिघलने, आदि के बारे में बात कर रहे है; जबकि अन्य प्लास्टिक और एथीन के बहुलक पर प्रतिबंध लगाने की बात कर रहे हैं। निस्संदेह विज्ञान ने हमारे जीवन को बहुत आसान और आरामदायक बना दिया है, लेकिन तस्वीर का दूसरा पहलू भी है। एक सिक्के के दो पहलुओं की तरह, एक वैज्ञानिक नीति के भी अपने नकारात्मक और सकारात्मक पक्ष होते हैं। इसलिए यह अनिवार्य है कि किसी भी वैज्ञानिक सिद्धांत को लागू करने से पहले हमें हमेशा उसके पक्ष और विपक्ष का मूल्यांकन करना चाहिए। हम सभी जानते हैं कि आवश्यकता आविष्कार की जननी है। अतः अधिकांश आधुनिक वैज्ञानिक सिद्धांत विश्व के पश्चिमी भाग में विकसित हुए हैं। पर्व इन आधुनिक सिद्धांतों में इसलिए पीछे नहीं रहा कि वे इन्हें विकसित नहीं कर सके या ऐसा करने में अक्षम थे, बल्कि इसलिए कि इस तरह के सिद्धांतों की दुनिया के इस हिस्से में आवश्यकता नहीं थी। इसे समझने के लिए एक सरल उदारहण बिजली, कांच और परमाणु ऊर्जा का आविष्कार होगा। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि भारत प्राचीन काल में सोने

की चिड़िया कहलाता था। भारतीयों ने विश्व की अधिकांश प्रमुख सभ्यताओं और देशों के साथ व्यापारिक संबंध रहे हैं। यह दिलचस्प है कि भारतीय व्यापारी न केवल देश में भारी मात्रा में धन लाए, बल्कि उन्होंने पड़ोसी देशों में भी मंदिर बनवाए जिनके साथ उनके व्यापारिक संबंध थे। कई सौ साल पुराने भारतीय मंदिर अभी भी श्रीलंका, बर्मा, बांग्लादेश, इंडोनेशिया और थाईलैंड, आदि देशों में पाए जा सकते हैं। यह ध्यान में रखी जाने वाली बात है कि रोमन साम्राज्य में भारतीय मसालों को सौ गुना लाभ पर बेचा जाता था, जहां से फिर इन्हें यूरोप के अंदरूनी हिस्सों में भेजा जाता था; और यह इसी तथ्य के कारण था कि पश्चिमी देशों ने भारत के साथ सीधे संबंध रखने के लिए एक–दूसरे के साथ होड़ लगाई। हालांकि यह सब उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद के उदय का कारण बना। लेकिन यहां ध्यान देने योग्य दिलचस्प तथ्य यह है कि उन्हें हमारी आवश्यकता अधिक थी, ना कि हमें उनकी आवश्यकता अधिक थी। भारत न केवल विश्व के भूगोल पर रणनीतिक रूप से स्थित है, बल्कि इसकी दुनिया में सबसे अच्छी जलवायु भी है जहां मई और जून के चिलचिलाती महीनों में भी कश्मीर, लेह और सियाचिन ग्लेशियर जैसे क्षेत्रों में बर्फबारी देखी जा सकती है जो दुनिया में सबसे ऊँचे युद्ध क्षेत्र के रूप में प्रसिद्ध है जहां किसी न किसी तरह की झड़पें अपने इस्लामी पड़ोसी के साथ होती रहती हैं जो दुनिया में आंतकवाद के गहरा होने के लिए जिम्मेदार है। इसलिए हमारा देश एक अनोखे जलवायु से समृद्ध है। हमारे यहां एक वर्ष में छह मौसम होते हैं और यूरोपीय लोगों के विपरीत जो दिन की शुरुआत में एक दूसरे को 'गुड मॉर्निंग' के रूप में शुभकामनाएं देते हैं, हम 'नमस्ते' या 'राम राम' के साथ अभिवादन करते हैं क्योंकि सुबह अपना महत्व खो देती है

और भारतीय लौकिक से परे जाकर उक्त अभिवादन के माध्यम से दूसरे व्यक्ति की आत्मा को नमन और सम्मान करते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि पश्चिमी दुनिया के विपरीत जहां सुबह अक्सर बारिश होती है और सड़कों पर कीचड़ होता है और जहां नियमित रूप से सूर्य दिखाई नहीं देता है, वहीं भारत में हर सुबह अच्छी होती है और धूप प्रचुर मात्रा में मिलती है। भारत में धूप इतनी तेज होती है कि किसी को कृत्रिम प्रकाश की शायद ही जरूरत होती है। जब लोग सुबह उठते हैं तो उन्हें भरपुर रोशनी प्राप्त होती है। कोई पढ़ाई कर सकता है, ऑफिस में काम कर सकता है या कोई खेत में अपना काम कर सकता है। इसलिए दुनिया के इस हिस्से पर कृत्रिम प्रकाश की कोई आवश्यकता नहीं है। यही कारण है कि प्रकाश का आविष्कार पश्चिमी दुनिया में हुआ। इसी तरह कांच का आविष्कार भी इस तथ्य के कारण है कि यह एक आवश्यकता थी क्योंकि यह उन्हें ठंडी हवाओं से बचा सकता था और साथ ही साथ धूप भी प्रदान कर सकता था। इसलिए आधुनिक विज्ञान का जन्म पश्चिमी दुनिया में हुआ क्योंकि भारत को इसकी कभी जरूरत नहीं पड़ी। भारतीयों ने बहुत अलग तरीके से सोचा जैसा कि हमारे अवलोकन से स्पष्ट होगा। किसी भी नई अवधारणा को लाने से पहले भारतीय दार्शनिकों ने हमेशा उसके फायदे और नुकसान को तौलने पर जोर दिया है या दूसरे शब्दों में कहे तो, भारतीय विचार और दर्शन ने हमेशा चीजों का तर्कसंगत तरीके से मूल्यांकन किया है और इस मूल्यांकन के बाद ही वे इन नए सिद्धांतों को लागू करने के बारे में सोचते।

प्रत्येक व्यक्ति, परिवार, समाज, समुदाय या राष्ट्र की कोई न कोई विचारधारा होती है। उदाहरण के लिए, कुछ परिवार व्यवसाय उन्मुख हैं, जबकि अन्य सेवा क्षेत्र में विश्वास करते हैं, क्योंकि यह नौकरी की सुरक्षा की भावना प्रदान करता है। इसी तरह एक देश भी किसी प्रकार की विचारधारा पर स्थापित होता है जो विस्तारवाद, निरंकुशता, तानाशाही या लोकतंत्र का पक्ष ले सकता है। किसी देश या समाज के अंदर सभी संबंधों को उसकी विचारधारा को ध्यान में रखकर देखा जाना चाहिए। इसलिए यह अनिवार्य है कि किसी विशिष्ट क्षेत्र की गहराई से समझ रखने के लिए, हम उसको विचारधारा से परिचित हों, जो कि आंशिक रूप से उसका दर्शन भी है। हालांकि 'दर्शन' शब्द की स्पष्ट परिभाषा देना उचित न हो, क्योंकि इस तरह की परिभाषा समझने की तुलना में अधिक भ्रम पैदा कर सकती है। लेकिन सामान्य धारणा के अनुसार, दर्शन को एक सिद्धांत या दष्टिकोण के रूप में समझा जा सकता है जो व्यवहार के लिए एक मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में कार्य करता है। दूसरी ओर, पर्यावरण हमारे चारों ओर के सभी तत्वों का योग है। पृथ्वी, वायु, जल, आकाश और जीवित जीव हमारे पर्यावरण के प्रमुख अवयव हैं। जब हम अच्छे या बुरे वातावरण के बारे में बात करते हैं, तो हम इसकी पृथ्वी की गुणवत्ता जो मिट्टी है, उसके पानी की गुणवत्ता जो भूमिगत जल या नदी या बारिश के रूप में हो सकती है, के आधार पर करते हैं। इसी प्रकार हवा और आकाश की गुणवत्ता भी एक विशिष्ट स्थान पर पर्यावरण की प्रकृति और गुणवत्ता का आकलन करने के लिए मानदंड हैं। चूंकि हमारी चर्चा का विषय भारतीय दर्शन और पर्यावरण के बीच संबंध है, इसलिए हम पर्यायवरण के साथ इस संबंध को अपनी विचारधारा या दर्शन के संदर्भ में समझने की कोशिश करेंगे।

आज की दुनिया में हम पर्यावरण से संबंधित बहुत सारी समस्याओं का सामना कर रहें हैं। इनमें से कुछ समस्याऐं समुद्र का बढ़ता स्तर, $CO_2$ का स्तर, ओज़ोन अवक्षय और हमारे जल निकायों जैसे तालाबों, झीलों, नालों, नहरों और नदियों का दूषित होना हैं, वायु और जल हमारे अस्तित्व का अभिन्न अंग हैं। वास्तव में, मानव शरीर के अस्सी प्रतिशत हिस्से में पानी और साथ ही साथ हवा होती है जिसमें हवा सांस के रूप में अंदर जाती है। इन दोनों घटकों के अभाव में जीवित रहना लगभग असंभव हो जाता है। अतः ताजी हवा और साफ पानी की कभी वैश्विक चिंता का विषय बन गई है। प्रदूषण अपने सभी रूपों में मानव और दूसरे प्राणियों के लिए घातक है। वास्तव में, सिंचाई के लिए उपयोग की जा रही नदियों के प्रदूषित पानी के परिणामस्वरूप हमारे अद्वितीय जीवों और वनस्पतियों का व्यापक विनाश हुआ ह। नदियों के जहरीले पानी का सेवन सभी जीवित जीव, जलीय और स्थलीय भी कर रहे हैं। इससे उनकी तत्काल मृत्यु हो जाती है। इसके अलावा खेतों में उपयोग किए जाने वाले कीटनाशक भी हैं जो निस्संदेह कीटों को खत्म करने में मदद करते हैं, लेकिन कई जीवों जैसे केंचुओं को नष्ट करने के लिए भी होते हैं जो मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसी तरह, औद्योगिक उत्पादन और वाहनों के यातायात से शहरों में वायु प्रदूषण के कारण कई मौतें होती हैं, खासकर बच्चों और बुर्जुगों की। कल्पना कीजिए कि इन समस्याओं के बीच मानवता, जीव–जंतुओं और वनस्पतियों का भविष्य कैसा होगा। प्लास्टिक का बढ़ता उपयोग भी चिंता का विषय है। हमारे लगभग सभी कंटेनर प्लास्टिक से बने होते हैं जिसमें मुख्य रूप से पॉलीथीन होता है। यह ध्यान देने योग्य है कि यह आधुनिक विज्ञान द्वारा आविष्कार किए गए सबसे पदार्थों में से एक है।

अगर इसे जलाया जाता है, तो यह जहरीला कचरा और जहरीली गैंसे पैदा कतरा है; अगर यह जमीन के नीचे दब जाता है, तो इसे सड़ने में कई सौ साल लगते हैं और अगर यह पानी के स्तर पर पहुंच जाता है और भूजल में मिल जाता है, तो पानी स्वयं जहरीला हो जाता है और उपयोग के लिए अनुपयुक्त हो जाता है। ऐसे वातावरण में प्रकृति, पर्यावरण, तत्वों और मनुष्यों के बीच संबंधों को फिर से परिभाषित करने की आवश्यकता अत्यधिक महत्व रखती है। आइए अब हम भारतीय दर्शन की पृष्ठभूमि में इन संबंधों को समझने की कोशिश करें और देखें कि भारतीय दर्शन प्रकृति और पर्यावरण के साथ हमारे संबंध को नवीनीकृत करने में हमारी मदद कैसे कर सकता है।

## 6.3 भारतीय दर्शन में वन

ऊँ ध्यौ शांतिर – अन्तरिक्षम शांतिः

पृथ्वी शांति – आपः शांतिर औषधयः शांतिः वनस्पतायः शांतिर विश्वदेवः शांतिर ब्रहमा शांतिः सर्व शांतिः शांतिरेव शांतिः सा मा शांतिरेधि

ऊँ शांति शांति शांतिः

युजर्वेद संहिता (36: 17)

शांति पूरे आकाश में और विशाल ईयर अंतरिक्ष में हो, इस पृथ्वी पर, जल में, सभी जड़ी–बूटियों में और वनों में शांति का वास हो, पूरे ब्रह्मांड में शांति का प्रवाह हो,

परमपिता में शांति हो,

सारी सृष्टि में शांति हो और केवल शांति हो,

शांति हम में प्रवाहित हो।

ऊँ शांति, शांति और शांति!

वेदों में वनों की तीन श्रेणियों का उल्लेख किया गया है तपोवन, महावन और श्रीवन। तपोवन मुख्य रूप से ऋषियों के आवासों के लिए जाना जाता था जहाँ राजा, राजकुमार और सामान्य व्यक्ति उनसे सलाह के लिए जा कर मिल सकते थे। 'तप' शब्द का अर्थ ध्यान होता है और ध्यान की तकनीक के माध्यम से ऋषि अपने सहज ज्ञान को तेज कर सकते थे। महावन के जंगल आमतौर पर आकार में बड़े होते थे और सभी जंगली पौधों, पेड़ों, जड़ी–बूटियों और झाड़ियों और जानवरों का निवास स्थान थे। श्रीवन के जंगल मंदिरों से जुड़े हुए थे और उनकी वनस्पति विशेष रूप से धार्मिक उपयोग के लिए थी। चूंकि स्थानिक पौधे विशिष्ट जलवायु परिस्थितियों में उगते हैं, मंदिर के आसपास और उनके क्षेत्राधिकार में ऐसे देशी वन स्वदेशी वनस्पतियों और जीवों के संरक्षण में सहायक थे। परन्तु ध्यान में रखने वाली बात है कि वनस्पतियों के साथ जीवों का संबंध गौण माना जाता था क्योंकि स्थानिक पौधों को प्राथमिकता दी जाती थी।

ऐसे वन या उपवन विशिष्ट भौगोलिक स्थानों में रहने वाले कुछ समुदायों के लिए भिन्न थे। पूर्व–वैदिक काल में प्रत्येक समुदाय में कुछ पौधों से जुड़ी कुछ मान्यताएं थीं, और ये अपने स्थानीय देवताओं को समर्पित थीं। ऐसी स्थितियों में उपवन देवी–देवताओं और पैतृक पवित्र आत्माओं से जुड़ गए। इस स्थानिक

वनस्पतियों के संरक्षण से वर्षा जल का संचयन हुआ, साथ ही मिट्टी और अन्य प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण हुआ। सी. पी. आर. पर्यावरण शिक्षा केंद्र में भारत की पारिस्थितिक विरासत और पवित्र स्थलों ने भारत के विभिन्न क्षेत्रों और पारिस्थितिक तंत्र से इन पवित्र उपवनों में से लगभग दस हजार का दस्तावेजीकरण किया है। इन वनों का राज्यवार वितरण इस प्रकार है : आंध्र प्रदेश, 677; अरूणाचल प्रदेश, 159; असम, 29; बिहार, 43; छत्तीसगढ़, 63; गोवा, 93; गुजरात, 42; हरियाणा, 57; हिमाचल प्रदेश, 329; जम्मू और कश्मीर, 92; झारखंड, 29; कर्नाटक, 1476; केरल, 1096; मध्य प्रदेश, 170; महाराष्ट्र, 2820; मणिपुर, 166; मेघालय, 105; ओडिशा, 188; पुडुचेरी, 108; राजस्थान, 560; सिक्किम, 16; तमिलनाडु, 1275; तेलंगाना, 57; उत्तराखंड, 133; उत्तर प्रदेश, 32; और पश्चिम बंगाल, 562। यहां यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि महान हिमालय की गोद में स्थित उत्तरी राज्य और दक्षिण भारत में स्थित पश्चिमी घाट जैव विविधता हॉटस्पॉट क्षेत्र है; जबकि आधुनिक राजस्थान और गुजरात के रेगिस्तानी क्षेत्र स्थानीय/स्थानिक जीवों और वनस्पतियों के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। गिर का जंगल जंगली बिल्लियों जैसे तेंदुए, बाघ और शेर, आदि के संरक्षण के लिए प्रसिद्ध है। दूसरी ओर, राजस्थान वन्य जीवन और स्थानिक पौधों से लगाव के लिए जाना जाता है। यहाँ के बिश्नोई समुदाय में पेड़ों के लिए बहुत सम्मान है। कुछ वर्षों के पहले हमने देखा था कि कैसे एक फिल्म स्टार काले हिरण के शिकार ने इस समुदाय को क्रोधित किया था। फिल्म अभिनेता के एक अमीर आदमी होने के बावजूद, वह स्थानीय आबादी को प्रभावित नहीं कर सका और वे उसके खिलाफ कानूनी सहारा लेने के लिए विवश हो गए। यह सब उपवनों की पवित्रता और इन उपवनों में

निवास करने वाले देवताओं द्वारा प्रदान की गई सुरक्षा में उनके दृढ़ विश्वास के कारण हुआ। इसलिए इस तरह के विश्वास काले हिरण जैसी लुप्तप्राय प्रजातियों के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जम्मू और कश्मीर राज्य में ऐसे पवित्र वन धार्मिक निकायों द्वारा प्रबंधित किए जाते हैं और पीर बाबा और माता वैष्णों देवी जैसे देवी–देवताओं को समर्पित हैं। हरियाणा राज्य में ये उपवन नौ गज्जा पीर और मणि गौजा पीर से संबंधित हैं जो औषधीय पौधों की रक्षा करने में और भूमिगत जल पुनर्भरण प्रणाली का नवीकरण करने में सहायक है।

हिमाचल प्रदेश राज्य भी अपने मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है, जिनमें से कई वन देवताओं को समर्पित हैं जैसे देव वन, देवता का जंगल या बाखू नाग देवता, रिंगारिशी देवता (एक प्राचीन ऋषि के नाम पर) और देवी, आदि। इसी तरह उत्तराखंड राज्य में भी उपवनों को भैवभूमि और बुग्याल के रूप में जाना जाता है, जो एक उच्च ऊँचाई वाले अल्पाइन घास के मैदान हैं। ये उपवन चंद्रबदनी देवी, हरियाली देवी, कोटगड़ी की कोकिला माता, प्रवासी पावसु देवता, देवराडा या सैम्यार को समर्पित हैं। ये वन स्वदेशी प्रजातियों  जीन भण्डार का संरक्षण करते हैं और विविध पौधों को समृद्ध स्रोत है। इन उपवनों में अनुष्ठान और पारंपरिक प्रथाएं कई संकट ग्रस्त प्रजातियों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

इस विषय पर चर्चा भगवान कृष्ण के संदर्भ के बिना अधूरी होगी जो अपनी रासलीला के लिए प्रसिद्ध हैं और विख्यात भारतीय महाकाव्य महाभारत में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कृष्ण वज (वर्तमान ब्रज) के पवित्र वन क्षेत्र में

पले–बढ़े, जहाँ उन्होंने अपने दोस्तों और गोपियों के साथ खेला। यह दर्ज है कि उस क्षेत्र में कई सौ वन थे; हालांकि, वर्तमान समय में यह संख्या घटकर मात्र बारह रह गई है। यह सब शहरीरण और औद्योगीकरण के नकारात्मक प्रभाव के कारण है। सबसे महत्वपूर्ण है वृंदावन, (वृंदा या तुलसी का जंगल)। वैसे तो वे सभी भगवान कृष्ण की कहानी से जुड़े हुए हैं, लेकिन वृंदा देवी काम्यवन में स्थापित देवी है।

**बोध प्रश्न 1**

1) वेदों में जंगलों को कैसे देखा गया? टिप्पणी करें।

........................................................................................................................

........................................................................................................................

........................................................................................................................

........................................................................................................................

........................................................................................................................

...................................................................

2) क्या आपको लगता है कि पहले के समय मे वनों ने परिरक्षककी भूमिका निभाई थी?

........................................................................................................................

........................................................................................................................

.....................................................................................................................................

.....................................................................................................................................

.....................................................................................................................................

....................................................................

## 6.4 भारतीय दर्शन में जल

जल प्रकृति का एक अनिवार्य घटक है जो जीवन के निर्वाह और प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पानी के प्रमुख स्रोत हिमनद, नदियां, नहरें, कुएं तालाब, बाबड़ी (पारंपरिक जलाशय), खाड़ियाँ, समुद्र और महासागर हैं। परन्तु यह जानना महत्वपूर्ण है कि सभी पानी मानव उपयोग के लिए उपयुक्त नहीं हैं। पानी में लवण की अत्यधिक उपस्थिति इसे सिंचाई और पीने के लिए अनुपयुक्त बनाती है। इसलिए हमारा ध्यान विशेष रूप से ताजे पानी पर केंद्रित है जो जीवनप्रद है। भारतीय शास्त्रों में इंद्र वर्षा के देवता का उल्लेख है। यह वही देवता है जिसे प्रसिद्ध महाकाव्य रामायण में महान राजा रावण के पुत्र ने पराजित किया था। इस उपलब्धि के कारण ही उन्हें इंद्रजीत के नाम से जाना था। यहाँ ध्यान देने की अधिक आवश्यकता यह है कि भारत में जल के स्रोतों को पवित्र माना जाता है जिसमें देवता का वास होता है। गंगा क किनारे के गांवों में रहने वाले लोग इसे हर तरह के प्रदूषण और निरादर से बचाने के लिए अत्यधिक सावधानी बरतते हैं क्योंकि उनके लिए यह सिर्फ एक नदी नहीं है बल्कि भगवान शिव और उनकी पत्नी पार्वती से जुड़ी एक दिव्य अस्तित्व है। ऐसा माना जाता है कि भगवान शिव के घुंघराले बालों से मां गंगा बहती है। इसी तरह यमुना नदी युमनोत्री हिमनद से निकलती है और इसे भी एक पवित्र

स्थल माना जाता है। जिन स्थानों पर नदियां पहुंचने में असफल रहती हैं, वहाँ लोग कुओं पर निर्भर रहते हैं जो पृथ्वी की सतह के नीचे स्थित जल स्तर से आपूर्ति पर निर्भर करते हैं। कुओं के पानी का उपयोग पीने के साथ–साथ सिंचाई के लिए भी किया जाता है। हालांकि बारिश से जलस्तर में वृद्धि होती रहती है। भारत ऋतुओं का देश है जिसमें हमारे पास चार ऋतुएं होती हैं – ग्रीष्म, शीत, वर्षा और शरद। बारिस के मोसम में धरती को पर्याप्त मात्रा में पानी मिलता है और सौभाग्य से जब पुराने वर्षों में जलापूर्ति के आधुनिक साधन अनुपस्थित थे, तब पानी गांवों में तालाबों के रूप में जमा हो जाता था। यह दिलचस्प है कि यह पानी इतना साफ और स्वच्छ और खनिजों से भरा होता था कि इसका उपयोग खाना पकाने के लिए किया जाता था। यह तथ्य बहुत प्राचीन नहीं है। आधुनिक पाइप लाइनों के आने से पहले यह सिर्फ बीस से तीस साल पुरानी प्रथा है। जिन गांवों में भू–जल पवित्र माने जाते थे, वे इस प्रथा को मानते थे। राजस्थान और गुजरात के मरूस्थलीय क्षेत्रों में अलग–अलग घरों के अपने भंडारण टैंक थे; और इन टैंकों में बारिश के पानी को सूखे महीनों को पूरी अवधि के लिए संग्रहित किया जाता था। इस तरह के अभ्यास ने न केवल लोगों को पानी की कमी से छुटकारा पाने में सहायता की बल्कि हमारे जलभृतों को रिचार्ज करने में भी सहायक था। इसक अलावा तालाबों, कुओं और टेंकों ने एक और महान उद्देश्य पूरा किया और वह था गांव की आबादी को बाढ़ से बचाना। यह ध्यान रखना भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि लगभग सभी मानव बस्तियों को प्रकृति के मूल रचना के साथ खिलवाड़ किए बिना सुनियोजित और बनाया जाता था। मानसून के मौसम में गुड़गांव जैसे कई आधुनिक शहरों में हाल ही में बाढ़ आई है। इस तथ्य के बावजूद कि

तकनीक इतनी उत्न्नत हो गई है, हमें आश्चर्य होता है कि इन शहरों का नियोजन कैसे हुआ। यह हमारे आधुनिक योजनाकारों पर पर्यावरण के लिए ज्ञान, दक्षता और चिंता पर एक गंभीर प्रश्न चिन्ह डालता है। इसके अलावा गुड़गांव और मानेसर जैसे इन बड़े शहरों के आसपास जंगली बिल्लियों का उपद्रव है। आए दिए किसी किसी फार्म हाउस की बाड़ के केंटीले तारों में तेंदुए के फसने या उसके करंट लगने की खबर सुनने को मिलती है। यह वास्तव में एक दुखद स्थिति है कि हमने आधुनिकता, शहरीकरण और औद्योगीकरण की आड़ में अपनी स्वार्थी जरूरतों के लिए पारिस्थितिकी तंत्र को नुकसान पहुंचाया है। सड़कों पर घंटों तक जलजमाव और कारों का तैरना तथाकथित 'शहरी विकास' का अपरिहार्य परिणाम है और मनुष्य द्वारा प्राकृतिक व्यवस्था से छेड़छाड़ है।

यह पहले ही चर्चा की जा चुकी है कि पानी ब्रह्मांड के पांच प्रमुख घटकों में से एक है। इसलिए देश के हर हिस्से में इसकी पूजा की जाती है। अधिकांश तीर्थ स्थल नदियों क पास स्थित हैं। गंगा, कावेरी, नर्मदा, सरस्वती, सिंधु और ब्रह्ममपुत्र कुछ प्रसिद्ध पवित्र नदियां हैं। पारंपरिक प्रथाओं में नदियों को न केवल जीवन को बनाए रखने के लिए आवश्यक माना जाता है बल्कि इन्हें देवी और मां का दर्जा भी दिया जाता है। नदी खेतों और मानव का पोषण इस तरह करती है जैसे एक बच्चे का उसकी मां करती है। हमारी नदियों की स्तुति में विभिन्न गीत और भजन हैं जो न केवल चलचित्रों में बल्कि हमारे प्राचीन साहित्य में भी मिलते हैं। ऋग्वेद में वर्णित भजन नदी स्तुति स्त्रोत के रूप में हैं जिसमें स्तुति का अर्थ है प्रार्थना। जब मनुष्य जीवन की समस्याओं से

निराश हो जाते हैं, तो उन्हें अक्सर नदी के किनारे प्रार्थना करते हुए देखा जाता है। वे अपनी अनसुलझी समस्याओं के समाधान के लिए किसी तरह की प्रार्थना करते हैं। किसी नदी के किनारे अंतिम संस्कार न करने पर मनुष्य की सांसारिक यात्रा भी पूर्ण नहीं मानी जाती थी। सभी प्रमुख सभ्यताओं और मानव आवासों को नदी के किनारे पाया जा सकता है। यहां तक कि हमारे प्रमुख राजमार्ग, सड़क मार्ग और रेलवे हमारी नदियों के प्राकृतिक मार्ग का अनुसरण करते हुए देखा जा सकता है। मृतकों का अंतिम संस्कार भी नदी के किनारे किया जाता है और उनकी राख नदी में बहा दी जाती है। जब मृतक की खोपड़ी में आग लग जाती है, तब लोग घर जाने से पहले नदी में स्नान करते हैं और मृतक की राख तीसरे दिन एकत्र की जाती है जब आग ठंडी हो जाती है। अगर कोई नदी में डूब जाता था और धारा के साथ बह जाता था अैर फिर उसकी लाश कभी न मिली, तो यह कभी नहीं कहा जाता था कि नदी ने उसे मार डाला या वह मर गया बल्कि यह कहा जाता था कि मां नदी ने उसे अपने साथ ले लिया है। ऐसे व्यक्ति को उस विशेष नदी माता के जीवन का अभिन्न अंग माना जाता था। गंगा नदी में लोगों की आस्था के आधार पर उत्तराखंड उच्च न्यायालय ने एक ऐतिहासिक फैसले में गंगा नदी को उसके सभी मौलिक अधिकारों  के साथ एक जीवित इकाई के रूप में माना है। पवित्र स्नान के लिए नदी की यात्रा करना एक तीर्थ स्थान माना जाता है। ऋग्वेद अनुसार तीर्थ का अर्थ है 'एक रास्ता या सड़क' (1.169.6, IV.29.3) या 'नदी में एक पायाब' (VIII. 47. 11)। फिर भी अन्य मामलों में यह किसी भी पवित्र स्थान को संदर्भित करता है और यह पवित्र स्थल आमतौर पर किसी नदी या समुद्र के किनारे स्थित होता है या फिर वह जल श्रोत जो किसी महत्वपूर्ण घटनाओं



ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

या महान संतों की उपस्थिति द्वारा पवित्र किए गए हो। काशी एक तीर्थ स्थल है। ब्रह्म पुराण तीर्थों को चार श्रेणियों में वर्गीकृत करता हैः दैव, यानी देवताओं द्वारा निर्मित (जैसे नदियां, काशी, पुष्कर, प्रयाग, आदि के शहर); असुर, यानि राक्षसों द्वारा बनाया गया (जैसे गयासुर); अर्श यानी ऋषियों द्वारा निर्मित (जैसे बदरी, प्रभास, आदि); और मनुष्य यानी पुरू, मनु, आदि जैसे मनुष्यों के पौराणिक पूर्वजों द्वार निर्मित। वैदिक यज्ञ पंथ को तीर्थों में बदल दिया गया, जिससे जल निकायों के किनारे इसका प्रसार सुनिश्चित हो गया। नदी के किनारे यज्ञ किया गया। यद्यपि पुराणों में तीर्थों से जुड़ी किंवदंतियाँ उनकी प्रभावकारिता का महिमामंडल करती हैं, वे उल्लेख करते हैं कि केवल एक पवित्र स्नान पर्याप्त नहीं है। इन कथाओं में हिन्दू धर्म का वास्तविक सर्वेश्वरवादी स्वरूप परिलक्षित होता है। तीर्थ में दान की गुणवत्ता पुराणों के सामाजिक धर्म से जुड़ी हुई है।

## 6.5 भारतीय दर्शन में झीलें

भारत में झीलें हमेशा से ही पानी की भण्डार रही हैं। वर्षा का शुद्ध जल झीलों और गांव के तालाबों में जमा हो जाता था। घरेलू जरूरतों और मवेशिया की जरूरतों के लिए पानी की दैनिक आपूर्ति के अलावा इन जल निकायों ने जलस्तर को फिर से भरने में सहायता प्रदान किया। तालाबों, झीलों और कुओं की खुदाई को एक नेक कार्य माना जाता था और बहुत से संपन्न लोग इन जल निकायों के रखरखाव में लगे हुए थे। प्रकृति के अन्य तत्वों की तरह झीलें भी स्वर्गीय शक्तियों से परिपूर्ण होने के कारण महत्वपूर्ण थीं। मानसरोवर के पश्चिम में स्थित राक्षसताल एक प्रसिद्ध झील है। इस सर्वव्यापी झील के द्वीपों

में से एक में लंका के प्रसिद्ध राजा, रावण ने अपने दस सिरों में से प्रत्येक को एक के बाद एक भगवान शिव को तब तक अर्पित किया जब तक कि उन्होंने उन्हें वह शक्तियां प्रदान नहीं कीं जिनकी उन्होंने कामना की थी। मानसरोवर झील के विपरीत, जो आकार में गोल है, राक्षसताल एक अर्धचंद्राकार आकार है। मानसरोवर झील को पवित्र माना जाता है जबकि राक्षसताल को राक्षसी राजा रावण के साथ संबंध के कारण अशुभ माना जाता है। हरियाणा के कुरूक्षेत्र जिले के नरकटारी गांव में एक तालाब है जिसका नाम भीष्म कुंड है। ऐसा कहा जाता है कि महाभारत के महाकाव्य युद्ध के दौरान जब अर्जुन ने भीष्म को हराया था, तब उन्होंने महान योद्ध अर्जुन से पानी मांगा था। अर्जुन ने अपने तीखे बाणों से पृथ्वी से जल निकाला। चूंकि जल की आवश्यकता भीष्म को थी, इसलिए तालाब का नाम उन्हीं के नाम पर रखा गया। तालाब के पास एक छोटा सा मंदिर है जहां हर साल देश से तीर्थयात्री पौराणिक पितामह भीष्म को श्रद्धांजलि देने आते हैं।

मंदिर के टैंक कृत्रिम जलाशय हैं जो आमतौर पर मंदिर परिसर के हिस्से के रूप में बनाए जाते हैं। उन्हें भारत की विभिन्न भाषाओं और क्षेत्रों में पुष्करिणी, कल्याणी, कुंड, सरोवर, बावली/बावड़ी, वाव, तीर्थ, तालाब, कोविल कुलम, आदि कहा जाता है। इन तालाबों का पानी औषधीय गुणों से भरपूर है। यह ध्यान देने योग्य है कि चिकित्सा पर्यटन जिसे वर्तमान दुनिया में एक नई प्रवृत्ति माना जाता है, भारत में अनादि काल से प्रचलन में हैं। चूंकि भारत अपनी विविधता के लिए जाना जाता है, इसलिए एक सींमाकित क्षेत्र में एक विशिष्ट जीव या वनस्पति की अनुपस्थिति को किसी अन्य क्षेत्र में उसकी उपस्थिति को

पाया जा सकता है। कुछ खनिजों की कमी जो बीमारियों को जन्म देती है, एक विशिष्ट स्रोत से निकले पानी द्वारा पूर्ण किया जा सकता है। मंदिरों के पास झीलों में पाए जाने वाले पानी के औषधीय गुणों में उपवनों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह संभव है कि सिंधु–सरस्वती क्षेत्र में मोहनजोदड़ों का महान स्नानागार एक मंदिर का तालाब था, जो शायद दुनिया में सबसे पुराना था। तीर्थ–यात्रियों को इन टैंकों में अपने चेहरे और पैर धोने की अनुमति है। मंदिर के कुंओं की एक और उल्लेखनीय विशेषता यह है कि जबकि दैनिक उपयोग के लिए अन्य जल निकायों से पानी निकाला जाता था, मंदिर के टैंकों से पानी को उपयोग के लिए नहीं निकाला जाता था क्योंकि इसे पवित्र माना जाता था। इसलिए भूजल को रिचार्ज करने के लिए मंदिर के टैंक महत्वपूर्ण और मूल्यवान जल निकाय बन गए।

बावड़ियां उत्तर भारत में काफी प्रचलित थीं। चूंकि पानी एक अनमोल संसाधन है और इसके बिना जीवन संभव नहीं है, हमारे पूर्वजों ने इस बहुमूल्य जीवन देने वाले स्रोत को संरक्षित करने का अत्यधिक ध्यान रखा। हरियाणा के महम में जानी चोर की बावड़ी की तरह उत्तरी भारत के विभिन्न हिस्सों में प्रसिद्ध बावड़ियां स्थित हैं। दिल्ली में भी कुछ प्रसिद्ध बावड़ियां है। हालांकि, हमारे पास सबसे पास सबसे प्रसिद्ध बावड़ी राजस्थान के जयपुर जिले के आभानेरी गांव में स्थित है और इसका नाम चाँद बावड़ी है। यह न केवल जल भंडार का एक उल्लेखनीय उदारहण है बल्कि एक वास्तुशिल्प चमत्कार भी है। इसमें 3500 सीढ़ियाँ हैं, सभी पत्थरों से बनी हैं और सबसे नीचे कुआं हे, जो मुश्किल समय के लिए बारिश के पानी का संरक्षण करता है। समय के साथ आभानरी की

बावड़ी पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बन गई है। पूर्वोत्तर भारत में भी मध्यकाल से ही मंदिर के तालाबों की परंपरा रही है। अहोम राजाओं को मंदिर के कुओं के संरक्षण के प्रति समर्पण के लिए जाना जाता है। इन टैंकों में सबसे उल्लेखनीय हैं : जॉयसागर टक (318 एकड़), शिवसागर टैंक (129 एकड़), गौरीसागर टैंक (150 एकड़) और रूद्रसागर टैंक, जो अभी भी मौजूद हैं। जॉयसागर टैंक का आधा हिस्सा पानी के नीचे स्थित है। दक्षिण भारत में भी कुओं के रख–रखाव की परंपरा है। दक्षिण भारत वर्षा पर निर्भर होने के कारण भूजल स्तर को बनाए रखने के लिए मंदिरों के तालाबों पर बहुत अधिक निर्भर है। हर मंदिर में एक या कई तालाब होते हैं, जिनमें सीढ़ियां पानी में उतरती हैं। हरिद्र नदी, मन्नारगुडी (तमिलनाडु तिरूवरूर जिला में) में राजगोपालस्वामी मंदिर का तालाब भारत का सबसे बड़ा मंदिर का तालाब हे। इसमें 23 एकड़ (93,000 वर्ग मीटर) का क्षेत्र शामिल है। इस कावेरी की बेटी के रूप में जाना जाता है। शहरीकरण और आधुनिकीकरण की मांगों के कारण इनमें से कई टैंक और कुएं कूड़े डालने के स्थान बन गए हैं। जबकि इनमें से कुछ जैसे कर्नाटक के बैंगलूरू जिले में धर्मबुद्धि को बस स्थानक बनाने के लिए सूखा दिया गया है।

## 6.6 भारतीय दर्शन में पौधे और जानवर

पौधे हमारे पर्यावरण का एक अभिन्न अंग हैं। हमें भोजन, ताजा ऑक्सीजन और बारिश देने के अलावा पौधे मिट्टी के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भ्मिका निभाते हैं। पौधों के बिना जीवन की कल्पना करना वास्तव में असंभव है। इसलिए भारतीय समाज में पौधों को अत्यधिक पवित्र माना जाता है। पौधे सामाजिक–आर्थिक

महत्व और औषधीय गुणों के कारण भी महत्वपूर्ण हैं। जब मानव समाज शिकार जमा करने वाले समाज से भोजन एकत्र करने वाले समाज में परिवर्तित हो रहा था, तब पृथ्वी को मां का प्रतीक माना जाने लगा और पौधों को उसका आर्शीवाद। समय के साथ पेड़ उर्वरता के प्रतीक बन गए और उन्हें अच्छी और बुरी आत्माओं का निवास माना जाता था। प्रारंभ में जब वनों को कृषि विस्तार के लिए साफ किया जा रहा था, कम से कम एक पेड़ खुले में छोड़ दिया जाता था। पेड़ के नीचे भाला, बेंत, हल या तलवार रखी जाती थी। बाद में इलाके को लकड़ी के डंडों से घेर दिया जाता था। धीरे–धीरे लकड़ी का बाड़ की जगह पत्थर को उपयोग में लाया जाने लगा। और इस तरह आधुनिक मंदिर कच्चे ढांचे से विकसित हुए। मंदिर के आसपास पेड़ों की उपस्थिति पाए जाते थे। मंदिर के अंदर जहाँ पेड़ स्थित होता था, उसे स्थल वृक्ष कहा जाता था। इस तरह के स्थलों ने पौधों और पेड़ों की स्थानिक लुप्तप्राय प्रजातियों को संरक्षित किया। वृक्ष–पूजा का सबसे पहला उदाहरण सिंधु–सरस्वती सभ्यता से मिलता है जैसा कि उस काल की मुहरों पर दर्शाया गया है। सबसे पवित्र पेड़ों में से एक पीपल का पेड़ या अश्वतथ है जो सैकड़ों साल पुराने पापों को दूर करने की शक्ति से ओतप्रोत है। भगवान बुद्ध ने एक पीपल के पेड़ के नीचे निर्वाण प्राप्त किया था और भगवान कृष्ण ने इस पेड़ के ही नीचे अपनी अंतिम सांस ली थी। इसलिए पीपल का पेड़ हिंदू और बौद्ध दोनों के लिए पवित्र है। इसके अलावा साहित्य में आग का पहला उदाहरण राजस्थान के थार रेगिस्तान से मिलता है जहां पाए जाने वाले खेजरी के पेड़ के साथ पीपल की लकड़ी को रगड़ कर आग उत्पन्न की गई। इन पेड़ों की पवित्रता कई गुना बढ़ जाती है, क्योंकि वे अग्नि के प्रवर्तक होते हैं जो ब्रह्मांड के महत्वपूर्ण तत्वों का प्रमुख



ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

घटक है। लगभग हर हिंदू अनुष्ठान में आग का उपयोग किया जाता है। विवाह अग्नि की उपस्थिति में संपन्न होते हैं और शवों का अंतिम संस्कार के लिए भी अग्नि अनिवार्य है, क्योंकि आग केवल पतित मानव शरीर को ही भस्म करती है। अनुष्ठानों में भी आग की एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है क्योंकि लगभग सभी भारतीय प्राथनाओं की शुरुआत दीया जलाने या हवन के प्रदर्शन से होती है।

बरगद का पेड़ भी सबसे पवित्र पौधों में से एक है। श्रीमद भगवत गीता का उपदेश भगवान कृष्ण ने कुरूक्षेत्र में एक बरगद के पेड़ के नीचे अर्जुन को दिया था। मूल निवासी अभी भी दावा करते हैं कि जो पेड़ स्थल पर है वह महाभारत के काल का है। इसके अलावा यह माना जाता है कि भगवान शिव बरगद के पेड़ के नीचे और देवी नीम के पेड़ के नीचे विराजमान हैं। नीम का पेड़ अपने औषधीय गणों के लिए प्रसिद्ध है और चेचक जैसे रोगों के उपचार में अत्यधिक उपयोगी है। तुलसी का पौधा आमतौर पर हर भारतीय घर में पाया जाता है और देवी लक्ष्मी से जुड़ा हुआ है। तुलसी के पौधे के गुणों से प्रेरित होकर बॉलीवुड ने इस पर 'मैं तुलसी तेरे आंगन की' नाम से एक फिल भी बनाई है। गूलर या उदुंबर एक और वृक्ष है जिसे कई भारतीय घरों में देखा जा सकता है। यह भगवान विष्णु जुड़ा हुआ है। इसे जीवन की इच्छा पूर्ण करने वाला पौधा माना जाता है और इसे आमतौर पर कल्पवृक्ष कहा जाता है। किंशुका की त्रिफली पत्तियां ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर (शिव) की हिंदू त्रिमूर्ति का प्रतिनिधित्व करती हैं। इसी तरह आम जो एक उत्कृष्ट फल माना जाता है, वह भी महत्वपूर्ण अनुष्ठानों से जुड़ा हुआ है। इसके पत्तों का उपयोग तोरण

बनाने के लिए किया जाता है जो आमतौर पर घर के प्रवेश द्वारा पर होता है। प्रार्थना और अन्य अनुष्ठानों के दौरान नारियल को सजाने के लिए आम के पांच पत्तों का उपयोग किया जाता है। तीन आंखों वाले नारियल को धार्मिक रूप से महत्वपूर्ण माना जाता है और इसे आमतौर पर मंदिर में पुजारियों के द्वारा तोड़ा जाता है और फिर प्रसाद के रूप में भक्तों के बीच वितरित किया जाता है।

### यक्ष और यक्षिणी

यक्ष और यक्षिणी एक विशिष्ट समुदाय या एक गांव के देवदूत अभिभावक हैं और ऐसा माना जाता है कि वे उस विशिष्ट पेड़ पर निवास करते हैं जो उसे क्षेत्र के लिए स्थानिक है। यक्ष शब्द ऋग्वेद, अथर्ववेद, उपनिषदों और ब्राह्मणों में कई बार आता है। हम बौद्ध जातकों में रूक्खदम्मा (या वृक्ष धर्म) जातक पाते हैं जो वृक्ष–पूजा के लिए समर्पित है। उन पारंपरिक कहानियों को याद करना महत्वपूर्ण है जो किसी ने अपने दादा–दादी से सुनी होगी। रूख शब्द का अर्थ है पौधा या पेड़। विश्वामित्र  और जमदग्नि को उनकी माताओं ने पेड़ों को गले लगाकर उत्पन्न किया था। यक्षों ने धन और संतान प्रदान किए। वे विवाह कराने, महिलाओं की शुद्धता की रक्षा करने वाले बच्चों और पोते–पोतियों का प्रदान करने वाले तथा भ्रूण की रक्षा करने वाले माने जाते थे। यक्ष जीवन की शक्तियों के साथ वनस्पति आत्माएं हैं। जैन धर्म में भी हमें यक्षों का उल्लेख मिलता है। यह माना जाता है कि प्रत्येक तीर्थकर में एक यक्ष और एक यक्षी शामिल होते हैं। इनमें से सबसे प्रमुख अंबिका (आम) है। पेड़ों ने यात्रियों को आश्रय भी प्रदान किया; उन्हें तूफान और बारिश से बचाया और

उन्हें लाक्षणिक रूप से लचीलापन का पाठ भी सिखाया जब हवा का झोंका किसी पेड़ से टकराता है, तो वह उसके आगे झुक जाता है; जब हवा का झोंका गुजर जाता है, तो वह फिर से उठकर अपनी मूल स्थिति में आ जाता है। मानव जीवन भी भाग्य के ऐसे ही झोंकों से भरा हुआ है। और यह प्रकृति ही है जो हमें विषम परिस्थितियों में लचीला होना सिखाती है। हम देखते हैं कि प्रत्येक दिन बीतने के साथ हमारे ग्रह पर जनसंख्या बढ़ती ही चली जा रही है और हम पर्याप्त मात्रा में कार्बन डाइऑक्साइड छोड़ रहे है। ऐसी विषम परिस्थिति में पौधे और केवल पौधे ही हमारे बचाव में आ सकते हैं। वर्तमान समय की वैज्ञानिक व्याख्या पेड़ों को देवताओं के साथ जोड़ने की आस्था को अंधविश्वास कह सकती है, लेकिन यहाँ तक कि सबसे कड़े अलोचक भी इस तथ्य से सहमत होंगे कि ये मान्यताएं मानव पीढ़ियों के लिए हमारे पारिस्थितिक तंत्र को बचाने में अत्यधिक सहायक थीं। आज की आधुनिक दुनिया में भी जहाँ लोग परंपरा, संस्कृति और अतीत की प्रथाओं में विश्वास करते हैं, वे अद्वितीय पेड़ों और जैव विविधता की हमारी समृद्ध विरासत के संरक्षण के माध्यम से मानवता की महान सेवा कर रहे हैं। इस प्रकार भारतीय दर्शन म पेड़–पौधों को हमेशा देवताओं का वास माना गया है और किसी पौधे पर कोई भी घुसपैठ अपशकुन का संकेत है और इसे सबसे जघन्य धार्मिक और आध्यात्मिक अपराधों में से एक माना जाता है।

**जानवर**

दर्शन के क्षेत्र में विश्व को भारत का प्रमुख योगदान अहिंसा का रहा है। लोग बहुधा अहिंसा को गांधी के संदर्भ में देखते हैं। हालांकि, यह शब्द उपनिषदों

जितना ही पुराना है। गांधी ने इसे वहीं से उधार लिया था। यह उपनिषदों में है कि हम 'अहिंसा परमो धमाः' का उल्लेख पाते हैं। इसलिए, भारतीय जानवरों की हत्या में विश्वास नहीं करते थे क्योंकि उनका मानना था कि परमात्मा सभी रूपों में रहते है चाहे वह जानवर हो या वनस्पति। इसलिए जानवरों की हत्या निषिद्ध थी। जैन धर्म, जो हिन्दू धर्म की एक शाखा है, का उदय हुआ क्योंकि खेती करते समय जिसमें जुताई की आवश्यकता होती थी, कई कीड़े और सरीसृप मारे जाते थे। इसलिए संवेदनशील लोगों ने खेती छोड़ दी और व्यापारी बन गए। यही कारण है कि जैन संप्रदाय से लगभग कोई भी किसान नहीं है। छांदोग्य उपनिषद 'सभी प्राणियों' (सर्वभूत) के खिलाफ हिंसा को रोकता है और अहिंसा के अभ्यासी को जन्म, मृत्यु और पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति पाने के लिए प्रेरित करता है। यह पाँच आवश्यक गुणों– सत्यवचनम (सच्चाई), अर्जवम (ईमानदारी), दनाम (दान) और तप (ध्यान) के साथ अहिंसा को भी समाविष्ट करता है।

**बोध प्रश्न 2**

1) भारतीय दर्शन में जल को किस रूप में देखा गया?

..........................................................................................................................

..........................................................................................................................

..........................................................................................................................

..........................................................................................................................

..........................................................................................................................

..................................................................

2)  भारतीय दर्शन में पौधों और जानवरों की चर्चा करें।

..................................................................................................................

..................................................................................................................

..................................................................................................................

..................................................................................................................

..................................................................................................................

..............................................................

## 6.7 सारांश

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप इस बात से अवगत हो गए हैं कि भारतीय दर्शन पर्यावरण के विभिन्न तत्वों को किस प्रकार देखता है। पाठ्य और अन्य प्रमाणों से आप उन विभिन्न तरीकों को समझ सकते हैं जिनमें पर्यावरणीय तत्वों के महत्व पर काम किया गया, संरक्षित और प्रचरित किया गया।

## 6.8 शब्दावली

**जीन भण्डार** : अंतःप्रजनन जनसंख्या में विभिन्न जीनों का भंडार।

**पारिस्थितिकी तंत्र** : हमारे पर्यावरण में जीवित और निर्जीवों का परस्पर संबंध

## 6.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

**बोध प्रश्न 1**

1)  खंड 6.3 देखें।

2)	खंड 6.3 देखें।

**बोध प्रश्न 2**

1)	खंड 6.4 और 6.5 देखें।

2)	खंड 6.6 देखें।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY